साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

जिंदगी कि बागों से कली चली गयी

राकेश सिंह

जिंदगी कि बागों से कली चली गयी

फुल तेरी यांदों के पन्नों में रह गए

कई बातें तुम बिन अधूरी रह गयी

दिल के कुछ अरमान दिल में रह गए

मेरी नींदों को तुम चुरा ले गयी

मेरे खवाबों को तुम उड़ा ले गयी

लेता था सांस जिस हवा में मैं

मेरे हिस्से की तुम फिजां ले गयी

फुल तेरी . . .

तेरे लहराते बालों की खुसबू को

बारिश की पहली घटा ले गयी

तुम जो गए हमसे

तो जिन्दगी हमसे हमारा पता ले गयी

हर बात पे जो हम हँसा करते थे

हम से वो हमारी अदा ले गयी

जिस धुन पे गुनगुनातें थे हम समों-सहर

वो सदाएं रह हाई और तुम साज ले गयी

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

वो तो दोस्ती थी मेरी समुंदर से 'साहिल'

जो तूफ़ान में भी किस्ती किनारा ले गयी

फुल तेरी . . .